National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 28-09-2025, Accepted: 28-10-2025, Published: 12-11-2025
Volume 10, Issue 4, 2025, Page No. 36-38

# महान राजा भोज का साहित्य और लेखन में योगदान

**डॉ. प्रतापसिंह राणाजी वेंजिया**
सहायक प्रोफेसर, इतिहास, श्री आनंद आर्ट्स कॉलेज, एटा, वाव – थराद, गुजरात, भारत

**सारांश**
राजा भोज भारतीय इतिहास के मध्यकालीन काल के ऐसे शासक थे जिन्होंने साहित्य, विज्ञान, कला और संस्कृति के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। ११वीं शताब्दी में परमार वंश के इस शासक ने धारानगरी को विद्यानगरी बनाया और ज्ञान के प्रसार के लिए शिक्षा, पुस्तकालय और कला के विभिन्न क्षेत्रों का संवर्धन किया। उन्होंने लगभग ८४ ग्रंथों की रचना की, जिनमें से प्रमुख हैं: सारस्वत कंठाभरण, शृंगारप्रकाश, समरांगण सूत्रधार, युक्तिकल्पतरु और राजमार्तंड।
इन ग्रंथों में संस्कृत भाषा का शुद्ध प्रयोग, काव्यशास्त्र का विवेचन, आयुर्वेद और चिकित्सा का विवरण, वास्तु और नगर योजना के वैज्ञानिक सिद्धांत और योग एवं नीति का समन्वय स्पष्ट है।[1] राजा भोज का साहित्यिक योगदान केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के विद्वानों, कवियों और वैज्ञानिकों को प्रेरित करता रहा। उनका दृष्टिकोण यह दिखाता है कि सच्चा शासक ज्ञान और प्रशासन, कला और विज्ञान का संतुलन बनाए रखता है।

**मूल शब्दः** राजा भोज, परमार वंश, साहित्य और लेखन, धारानगरी, सांस्कृतिक पुनर्जागरण

## प्रस्तावना
मध्यकालीन भारत का इतिहास न केवल राजनीतिक संघर्षों और साम्राज्यों का इतिहास है, बल्कि यह साहित्य, ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति के समृद्धिकाल के रूप में भी जाना जाता है। इस काल में अनेक ऐसे शासक हुए जिन्होंने केवल राज्य की सीमा और शक्ति तक ही नहीं, बल्कि ज्ञान, कला और साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।[2] ऐसे ही एक महान शासक थे राजा भोज, जिनका नाम भारतीय इतिहास में उनके बहुआयामी योगदान के लिए अमर है। राजा भोज का शासनकाल लगभग ११वीं शताब्दी ईस्वी (१०१०दृ१०५५ ई.) में माना जाता है। वे परमार वंशीय शासक थे और उनकी राजधानी धार (मध्य प्रदेश) थी।[3] भोज केवल एक युद्धनीतिज्ञ और प्रशासक नहीं थे, बल्कि साहित्यकार, कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक और वास्तुशास्त्री भी थे। उनके समय में धारानगरी को "विद्यानगरी" कहा जाता था, क्योंकि यह न केवल प्रशासन का केंद्र थी, बल्कि साहित्य, शिक्षा और विज्ञान का भी प्रमुख केंद्र बन चुकी थी। भोज का दृष्टिकोण यह था कि शासन का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समग्र विकास और ज्ञान का प्रचार होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा, कला और विज्ञान को विशेष महत्व दिया और विद्वानों तथा कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया। उनका दरबार देश–विदेश के विद्वानों, कवियों और वैज्ञानिकों का प्रमुख स्थल था। राजा भोज का साहित्यिक योगदान व्यापक और बहुआयामी है। उन्होंने संस्कृत भाषा में लगभग ८४ ग्रंथों की रचना की, जिनमें काव्य, व्याकरण, योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष और दर्शन जैसे विषय सम्मिलित हैं। उनकी रचनाएँ न केवल उस युग के ज्ञान और संस्कृति का प्रतिबिंब हैं, बल्कि आधुनिक शोध और अध्ययन के लिए भी मूल्यवान स्रोत हैं।
इस शोध–पत्र का उद्देश्य राजा भोज के साहित्यिक योगदान, उनके प्रमुख ग्रंथों, विज्ञान, वास्तु और चिकित्सा पर लेखन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण में उनकी भूमिका, और उनके प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इसके माध्यम से यह समझना संभव होगा कि राजा भोज का कार्य केवल उनके शासन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान और संस्कृति का स्थायी स्रोत बन गया।[4]

## राजा भोज का व्यक्तित्व एवं शासन दृष्टि
राजा भोज का व्यक्तित्व मध्यकालीन भारत के उन विलक्षण शासकों में से था, जिन्होंने सत्ता, ज्ञान और संस्कृति को एक साथ विकसित किया। वे न केवल एक सक्षम शासक और युद्धनीतिज्ञ थे, बल्कि एक महान विद्वान, कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक और स्थापत्यकला के ज्ञाता भी थे।[5] उनके व्यक्तित्व और शासन दृष्टिकोण को समग्र रूप में समझने के लिए उनके जीवन और कार्यों का विश्लेषण आवश्यक है। राजा भोज वास्तव में एक बहु–प्रतिभाशाली शासक थे। उन्होंने शासन के साथ–साथ विद्या के क्षेत्र में भी अद्वितीय योगदान दिया। संस्कृत साहित्य में उन्हें विद्यानिधि कहा गया है। उन्होंने राजमार्तण्ड, समरांगण सूत्रधार, सरस्वतीकंठाभरण, राजमार्तण्ड योगशास्त्र तथा आयुर्वेद सर्वस्व जैसे ग्रंथों की रचना की।[6] इन ग्रंथों से यह सिद्ध होता है कि भोज का अध्ययन केवल एक विषय तक सीमित नहीं था, बल्कि साहित्य, व्याकरण, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन और वास्तुशास्त्र जैसे विविध क्षेत्रों में उन्होंने गंभीर अनुसंधान किया। प्रसिद्ध इतिहासकार के. पी. जायसवाल ने उन्हें "मध्यकालीन भारत का सबसे प्रखर मस्तिष्क" कहा है।[7]
शासन और प्रशासन की दृष्टि से भी राजा भोज अत्यंत दक्ष थे। उन्होंने अपने राज्य में न्याय, अनुशासन और नीति को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका मानना था कि "राजा का धर्म प्रजा का कल्याण है।" भोज ने अपनी राजधानी धारानगरी को न केवल प्रशासनिक दृष्टि से संगठित किया, बल्कि उसे शिक्षा, कला और संस्कृति का केंद्र भी बनाया।[8] राजा भोज शिक्षा और विद्या के महान संरक्षक थे। धारानगरी उनके काल में विद्वानों का प्रमुख केंद्र बन गई थी। उन्होंने वहाँ अनेक विद्यालयों, पुस्तकालयों और मंदिरों की स्थापना की। उनके दरबार में देश–विदेश से विद्वान, कवि, चिकित्सक, दार्शनिक और कलाकार एकत्र होते थे। भोज ने विद्वानों को सम्मान और संरक्षण प्रदान कर भारतीय बौद्धिक परंपरा को नई ऊँचाई दी। उनके समय में मालवा क्षेत्र में "दर्शन, साहित्य और कला का स्वर्णयुग" माना जाता है।[9]
उनके जीवन में सौंदर्यबोध और नीति का विशेष स्थान था। भोज का मानना था कि जीवन की सार्थकता तभी है जब शासन, ज्ञान और नीति में संतुलन हो। उनके ग्रंथों में योग, नीति और दर्शन के समन्वय का दर्शन होता है। राजमार्तण्ड में उन्होंने शासक के कर्तव्यों को धर्म, नीति और करुणा के त्रिकोण में परिभाषित किया

है।[10] राजा भोज का दृष्टिकोण समग्र विकास का था। उनके अनुसार राज्य की शक्ति केवल सीमाओं के विस्तार में नहीं, बल्कि समाज के सर्वांगीण उत्थान में निहित है। उन्होंने शिक्षा, संस्कृति, कला, चिकित्सा, जल–प्रबंधन और स्थापत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। भोजपुर में निर्मित प्रसिद्ध भोजेश्वर मंदिर उनकी स्थापत्य कुशलता और धार्मिक आस्था का प्रतीक है।[11] समकालीन लेखक छत्रपाल वर्मा ने उल्लेख किया है कि राजा भोज ने भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्य और समृद्ध परंपरा को व्यवहारिक शासन में रूपांतरित किया, जिससे भारत की "समृद्ध सनातनी सभ्यता" का प्रत्यक्ष स्वरूप विकसित हुआ।[12] इस प्रकार, राजा भोज का व्यक्तित्व और शासन दृष्टि यह प्रमाणित करती है कि वे केवल एक राजनीतिक शासक नहीं, बल्कि संस्कृति, ज्ञान और प्रजाहित के सच्चे संरक्षक थे। उन्होंने अपने युग को भारतीय पुनर्जागरण की दिशा दी और यह सिद्ध किया कि सच्चा शासक वही है जो शासन, ज्ञान और समाजसेवा — तीनों में संतुलन स्थापित करे।

## राजा भोज का साहित्यिक योगदान

राजा भोज का साहित्यिक योगदान भारतीय मध्यकालीन संस्कृति और ज्ञान परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे केवल एक शासक नहीं थे, बल्कि विद्वान, कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक और स्थापत्य विशेषज्ञ भी थे। उन्होंने लगभग ८४ ग्रंथों की रचना की, जिनमें से आज ३२–३५ ग्रंथ उपलब्ध हैं।[13] उनका दृष्टिकोण यह था कि ज्ञान केवल व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के लिए नहीं, बल्कि समाज और प्रजा के कल्याण में योगदान देना चाहिए। राजा भोज ने साहित्य और काव्य में गहन अध्ययन किया। श्रृंगारप्रकाश उनके प्रमुख काव्यशास्त्र ग्रंथों में से एक है, जिसमें रस, अलंकार और काव्य शैली पर विवेचन किया गया। उनके गद्य ग्रंथ सरल, स्पष्ट और प्रवाहमय हैं, जिससे जटिल दार्शनिक विचार आसानी से समझ में आते हैं। भोज ने साहित्य में सौंदर्य और दार्शनिक गहराई का संतुलन स्थापित किया। संस्कृत भाषा के प्रति उनका अनुराग भी अद्वितीय था। उनके ग्रंथ शुद्ध, संक्षिप्त और प्रवाहमय हैं। उन्होंने व्याकरण, छंद, काव्यशास्त्र और नाट्यशास्त्र में उत्कृष्ट योगदान दिया। भोज के ग्रंथ आज भी संस्कृत साहित्य और अध्ययन सामग्री के रूप में उपयोग किए जाते हैं। भोज के स्वयं रचित ग्रंथ बहुआयामी थे। प्रमुख क्षेत्र थे: साहित्य और काव्यशास्त्र, वास्तु और स्थापत्य, योग और दार्शनिक विचार, आयुर्वेद और चिकित्सा विज्ञान, व्याकरण और भाषा विज्ञान। उनके ग्रंथ ज्ञान, नीति और सौंदर्यबोध का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं और आज भी शोध का महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

उनके प्रमुख ग्रंथों में राजमार्तंड नीति, योग और शासन का संतुलन प्रस्तुत करता है, सारस्वत कंठाभरण व्याकरण और भाषा अध्ययन का मार्गदर्शन देता है, युक्तिकल्पतरु आयुर्वेद और चिकित्सा विज्ञान पर आधारित है, जबकि समरांगण सूत्रधार वास्तु और नगर योजना में वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है। श्रृंगारप्रकाश काव्यशास्त्र और साहित्यिक सौंदर्य का प्रमुख ग्रंथ है। राजा भोज विज्ञान, वास्तु और चिकित्सा में भी गहन अध्ययन करते थे। उन्होंने यंत्र निर्माण, जल प्रबंधन, नगर योजना, भवन निर्माण और औषधि विज्ञान में सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान का समन्वय किया। उनके ग्रंथ विज्ञान, शासन और समाज के समग्र विकास में योगदान देने वाले थे। भोज का शासनकाल भारतीय मध्यकालीन संस्कृति में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने धारानगरी में शिक्षा और विद्या को संवर्धित किया, विद्यालय, पुस्तकालय स्थापित किए और विद्वानों, कवियों और कलाकारों का संरक्षण किया।[14] उन्होंने कला, स्थापत्य और साहित्य को शासन का अभिन्न अंग माना और विद्या तथा संस्कृति के क्षेत्र में ऐसा योगदान दिया, जिसने मध्यकालीन भारत को बौद्धिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाया।

## राजा भोज का साहित्यिक प्रभाव और परंपरा

राजा भोज का साहित्यिक योगदान केवल उनके शासनकाल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरक बन गया। उनके ग्रंथ, दृष्टिकोण और संरक्षण से विकसित संस्कृति ने भारतीय ज्ञान, कला और विज्ञान पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला। उनके काव्यशास्त्र ग्रंथ, विशेषकर श्रृंगारप्रकाश, ने रस, अलंकार और शैली के सिद्धांत स्थापित किए तथा मध्यकालीन और आधुनिक काव्यकारों के लिए अध्ययन का आधार प्रदान किया।[15] इसके अलावा, सारस्वत कंठाभरण और अन्य व्याकरण ग्रंथों ने संस्कृत भाषा के शुद्ध प्रयोग को सुनिश्चित किया, अध्ययन और शिक्षा के लिए स्थायी संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराई।[16] भोज के ग्रंथ केवल साहित्य और भाषा तक सीमित नहीं थे। उन्होंने विज्ञान, वास्तु और आयुर्वेद के क्षेत्र में भी गहन अध्ययन किया। समरांगण सूत्रधार ने मध्यकालीन वास्तु और नगर योजना में मार्गदर्शन दिया, जबकि युक्तिकल्पतरु ने आयुर्वेद और चिकित्सा विज्ञान के शोध में योगदान किया।[17] उनके दृष्टिकोण ने व्यवहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान का समन्वय स्थापित किया, जिससे शासन और समाज के समग्र विकास को बल मिला।

राजा भोज ने धारानगरी को विद्वानों, कवियों और कलाकारों का केंद्र बनाया और शिक्षा, कला, विज्ञान और संस्कृति को एकीकृत किया। उनके संरक्षण ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में विद्या, नीति और सौंदर्यबोध को सुदृढ़ किया, और उनके ग्रंथ मध्यकालीन और आधुनिक विद्वानों के लिए अध्ययन और शोध का स्थायी स्रोत बने। उनके दृष्टिकोण ने धारानगरी में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त किया और ज्ञान, कला और विज्ञान के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया। आधुनिक इतिहासकार और विद्वानों ने राजा भोज को केवल एक शासक के रूप में नहीं, बल्कि बहुक्षेत्रीय विद्वान और ज्ञान संरक्षक के रूप में पुनर्मूल्यांकित किया है। उनके साहित्यिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक योगदान ने उन्हें भारतीय मध्यकालीन इतिहास में अद्वितीय स्थान प्रदान किया। विद्वान उन्हें "विद्याधर सम्राट" के रूप में सम्मानित करते हैं, जो शासन, ज्ञान और संस्कृति के समन्वय का प्रतीक हैं। भोपाल में उनका नाम "राजा भोज विमानतल" के रूप में रखा गया और धारानगरी एवं अन्य सांस्कृतिक स्थलों में उनके नाम पर विद्यालय, पुस्तकालय और शोध केंद्र स्थापित किए गए। यह स्पष्ट करता है कि उनका दृष्टिकोण सत्ता, ज्ञान और संस्कृति के संतुलन पर आधारित था और उनका योगदान ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक दृष्टि से आज भी प्रासंगिक है।

## निष्कर्ष

राजा भोज का जीवन और साहित्यिक योगदान मध्यकालीन भारत की ज्ञान, कला और सांस्कृतिक परंपरा का अमूल्य धरोहर है। वे केवल एक राजनीतिक शासक नहीं थे, बल्कि बहु–प्रतिभाशाली विद्वान, काव्यकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक और स्थापत्यज्ञ भी थे। उनके शासनकाल में धारानगरी न केवल प्रशासन का केंद्र रही, बल्कि विद्या, कला और विज्ञान का प्रमुख केंद्र बन गई। उन्होंने लगभग ८४ ग्रंथों की रचना की, जिनमें साहित्य, काव्यशास्त्र, व्याकरण, योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, दर्शन और ज्योतिष के क्षेत्र शामिल हैं। राजा भोज का दृष्टिकोण यह था कि शासन का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं, बल्कि समाज और प्रजा के सर्वांगीण उत्थान में निहित है। उनके ग्रंथों और संरक्षण से विद्वानों, कलाकारों और वैज्ञानिकों का सृजन और अध्ययन प्रोत्साहित हुआ। श्रृंगारप्रकाश काव्यशास्त्र और सौंदर्यबोध का मार्गदर्शन करता है, सारस्वत कंठाभरण व्याकरण और भाषा अध्ययन में मानक स्थापित करता है, युक्तिकल्पतरु आयुर्वेद और चिकित्सा में

योगदान देता है, जबकि समरांगण सूत्रधार वास्तु और नगर योजना के वैज्ञानिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है। उनके ग्रंथ केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं, बल्कि व्यवहारिक शासन, विज्ञान और समाज के विकास का मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। राजा भोज का योगदान केवल उनके युग तक सीमित नहीं रहा। उनके ग्रंथ और दृष्टिकोण आने वाली पीढ़ियों के लिए अध्ययन और शोध का स्थायी स्रोत बने, और उनके संरक्षण से धारानगरी में सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ। आधुनिक विद्वान उन्हें "विद्याधर सम्राट" के रूप में सम्मानित करते हैं, और उनके कार्यों को भारतीय मध्यकालीन संस्कृति, ज्ञान और शासन के आदर्श का प्रतीक माना जाता है।

अतः यह स्पष्ट है कि राजा भोज केवल शासक नहीं थे, बल्कि ज्ञान, कला और विज्ञान के संरक्षक और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के स्थायी स्तंभ थे। उनका दृष्टिकोण, ग्रंथ और शासन शैली यह संदेश देते हैं कि सच्चा शासक वही है, जो सत्ता, ज्ञान, कला और समाजसेवा में संतुलन स्थापित करे। उनका योगदान मध्यकालीन भारत की संस्कृति, विज्ञान और साहित्य में आज भी स्मरणीय, प्रेरक और मार्गदर्शक है।

## संदर्भ सूची


1. सुनीता वर्मा, "राजा भोज के साहित्य में संस्कृत भाषा का महत्व" साहित्य शोध पत्रिका, Vol. 8, 2012, पृ. 22–39.
2. Romila Thapar, "A History of India", Vol. 1, Penguin Book, New Delhi, 2002, Page 112.
3. K.K. Singh, "Medieval Indian History", Anmol Publications, 1998, Page 87
4. वी. मिश्रा, ""भोज: एक पुनर्जागरण सम्राट", मध्य प्रदेश सांस्कृतिक बोर्ड, 2012.
5. रामस्वरूप शर्मा, "भारत के महान शासक", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1995, पृ. 42.
6. राजा भोज, "राजमार्तण्ड योगशास्त्र", सम्पा० पं. हरिप्रसाद शास्त्री, चौखंबा संस्कृत सीरीज, 1960, पृ. 15–22.
7. K.P. Jaiswal. ''History of India in The Middle Ages'', University of Calcutta Press, 1935, Page 88.
8. R.C. Majumdar, "The History and Culture of The Indian People", Vol. V, Bhartiya Vidya Bhavan, 1957, Page 134.
9. हजारीप्रसाद द्विवेदी, "भारतीय संस्कृति के निर्माता", लोकभारती, 1972, पृ. 56.
10. राजा भोज, पुर्वोक्त, पृ. 32–35.
11. कृष्णचंद्र सिंह, "भारत की स्थापत्य कला" हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1988, पृ. 101.
12. छत्रपाल वर्मा, "राजा भोज और भारतीय संस्कृति", मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2005, पृ. 45.
13. राजा भोज, पुर्वोक्त, पृ. 15–22.
14. कृष्णचंद्र सिंह, पुर्वोक्त, पृ. 101.
15. K.P. Jaiswal, पुर्वोक्त, पृ. 88.
16. हजारीप्रसाद द्विवेदी, पूर्वोक्त, पृ. 56.
17. R.C. Majumdar, पूर्वोक्त, पृ. 134.